परमात्म शक्तियों द्वारा महापरिवर्तन का समय

विषय परसम्मेलन एवं शिविर

दिनाँक : 7 से 11अगस्त, 2015 **स्थान :म्मनमोहीनी**

परिसर, आबू पर्वत

:आयोजक :

धार्मिक प्रभाग (राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान) तथा

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

धार्मिक प्रभाग के **परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय** सम्मेलन एवं शिविर के **उदधाटन सत्र में** रामनाथ भाई जी ने कहा आज सारा विश्व चाहता है, शान्ति हो। आज इस अरावली के शांत वातावरण में बैठ कर ऐसी तपस्या करें जो वायब्रेशन हम सारे विश्व में फैलायें। ज्ञान आज सबको है, पर आज सब इसका अनुभव करना चाहते हैं। मनुष्य आत्माओं में बुद्धि है अर्थात् समझ है। हर कर्म हमें सदा समझ कर करना चाहिए। अब समय है ज्ञान का प्रयोग करने का। सदा अन्य के प्रति शुभ सोचो। इसी लक्ष्य को लेकर इस समेलन का आयोजन कीया गया है। हम सभी मिल कर साधना करें, ताकि विश्व में शान्ति के प्रकम्पन्न फैले।

सम्मेलन का लक्ष्य एवं उद्देश्य को बताते हुए इलाहाबाद की राजयोग शिक्षिका,मनोरमा बहन जी ने कहा, परमात्मा ने साइलेंस की शक्ति दी है। इस साइलेंस की शक्ति से उस सता के दर्शन हो सकते हैं। परमात्मा के द्वारा देने में कोई फर्क नही है। फर्क है तो हमारे लेने में। परमात्मा समान रूप से सब को देता है। यह प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में सब वर्गों-धर्मों-जातियों को साथ लेकर चलने की परम्परा है।हम यह सम्मेलन इसलिए करते हैं कि इस मंच पर बैठ कर हम एक संकल्प –प्रेम-सौह्रदय-सहयोग का वातावरण बनायें। स्वामी रामदिनेशाचार्य जी महाराज हरिधाम पीठ गोपालमन्दिर, अयोध्या ने कहा,परम शान्ति का ज्ञान इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा मिलता है। हमारा भौतिक विकास बहुत हुआ है पर नहीं आध्यात्मिक विकास पीछे रह गया। अनादि काल से परिवर्तन परमात्मा द्वारा ही हुआ है। हमारा आचरण धार्मिक होना चाहिए। श्री 1008 स्वामी शिवस्वरूपानंदजी ने कहा आज परिवर्तन समय की मांग है। आज हमें अपनी संस्कृति को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। मैने जो यहां का रुप देखा, वो मेरे दिल को स्पर्श कर दीया। यहां का प्रेम,व्यवहार दिव्य और अदभूत देखा। इस संस्था के द्वारा जो कार्य हो रहा है उसे विश्व जानेगा। स्वामी केशवान्नद सरस्वती जी ने कहा, परमात्मा का अनुभव इस ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा होता है। हम यहां आकर जो देखते सुनते हैं वही हम अपने घरों में जाकर करें।

राजयोगीनी दादी रतनमोहिनी जी ने कहा परमात्मा की संतान अपने को मानना अर्थात् उस जैसे आचरण पर चलना। अभी परिर्वतन काल है। धर्म ग्लानी अर्थात , धर्म को जानते हुए धर्म के अनुसार कर्म न होना। यह कलियुग अंत का समय है, अब एक सत धर्म की स्थापना का कार्य एक परमात्मा के सिवाय कोई नहीं कर सकता है।

दिनांक : 08 अगस्त 2015 खुला प्रथम सत्र उषा बहन् ने कहा ज्ञान, योग व धारणा द्वारा हमारे अंदर के परमात्मिक गुण व शक्तियां उजागर करती है। बिना आद्यात्मिक मार्ग के आज की परिस्थियों का सामना करना अति कठिन है। श्री 1008 स्वामी शिवस्वरुपानंद जी ने कहा सब कुछ करते हुऐ भावना नही रखनी चाहिए कि 'मैं करता हूँ'। जब तक परमात्मा की कृपा नही होगी तब तक जीवन में सफलता नही है। परमात्मा की मिली हुई शक्तियों द्वारा विश्व नव निर्माण किया जा सकता है।श्री जगदीश सिंह जिन्डा जी ने कहा इस पवित्र धरणी पर विश्व परिवर्तन होगा ही है। अब तक किसी धर्म को इतना उंच स्थान नही दिया है, जितना इस संस्था द्वारा दिया जा रहा है।

स्नेह मिलन रामनाथ भाईजी ने कहा संसार चाहता है हम सब मिल कर एक सुंदर संसार बनाऐ। इस संस्था का नाम ईश्वरीय विश्वविध्यालय है। अर्थात ईश्वर द्वारा स्थापित। हमें दूसरों का परिवर्तन करने का प्रयत्न नही करना चाहिये परंतु पहले स्वपरिवर्तन करना है।1008 ने कहा साधना द्वारा मन, बुद्दि और संस्कार द्वारा जीवन में बदलाव आवश्यक है।अगर जीवन नही बदलता है तो साधना में परिवर्तन की आवश्यकता है।वसुदेव कुटुम्बकम् का विचार फैलाने का अभी समय है, क्योंकि अब परिवर्तन का समय है। यहाँ आकर ऐसा लगता है कि हम मृत्यु लोक में नही, स्वर्ग में बैठे है।अगर हम सब स्नेह के सूत्र में बन्ध जाये तो सर्व धर्म बंधुत्व हो ही जायेगा।इस समय संसार में जो भी परिवर्तन हो रहा है वो केवल शरीर से सम्बन्धित है, परन्तु जब आत्मा के सम्बन्धित परिवर्तन होगा तभी सर्वधर्म बंधुत्व हो सकता है। हमारे कथनी और करनी समान होनी चाहिए।

प्रथम प्रवचन माला समय सायं: 5-00 से 6-30 तक, विषय महसूसता द्वरा आन्तरिक शक्तियों की जाग्रति- सुरजभाई, माऊण्ट आबू द्वितीय प्रवचन माला समय सायं: 6-30 से 8-00 तक, विषय शान्ति अनुभूति एवं प्रवचन सत्र- रामनाथ भाई, माऊण्ट आबू एवं निरूपमा बहन, सोमप्रभा बहन, कुन्ती बहन द्वारा योग अभ्यासत्रतीय प्रवचन माला समय रात्रि: 9-00 से 10-00 तक, विषय यथार्थ साधना में स्वास्थ्य – डा. सतीश गुप्ता, माऊण्ट आबू

खुला चतुर्थ सत्र दिनांक : 09 अगस्त 2015 प्रात: 10 से 11 स्वा मी माधव दास जी शास्त्री ने कहा परमेश्वर क्या है? कहाँ है? ये सब अनुभव इस भूमि से हो रहा है।धर्म एक ऐसी चीज है जो जीवन के पहले और जीवन के बाद सुख और सहायता दे सकता है। पूरे विश्व में ब्रह्मा कुमारीज के हजारो सेवा केंद्रो के माध्यम से जबर्दस्त प्रयास किया जा रहा है।स्वामी विवेक मुनीजी, संचालक - विश्व अहिंसा संघ, नई दिल्ली ने कहा यहाँ के आध्यात्मिक वातावरण में कणकण में प्रेम शांति है जहाँ सबका हृदय गदगद होजाता है। मनुष्योंको मानवीय गुणों से संस्कारित करना होगा, जिससे ज्ञान योग का दीप प्रज्वलित होता है। ब्रह्माकुमारीयां ज्ञान की ज्योत प्रज्जवलित करती है जिससे मनुष्य स्वयं का और विश्व का विकास कर सकता है।ब्र.कु. गोदावरी बहन, राजयोग शिक्षिका, मुलुन्द ने कहा सनातन संस्कृति माना ही सत्यता भरा जीवन। सनातन जीवन के चार फाउण्डेशन है सत्यता- पवित्रता–अहिन्सा-ब्रह्मचर्य, वर्तमान समय चारो ही पिलर हिल जाने के कारण चारो ओर समस्याए बढ रही है।आपने देह अभिमान को सबसे बडा खतरा बताया। सदाकत हुसैन मौलाना सथेली, (इमाम), फर्रुखाबाद ने कहा ब्रह्माकुमारीज मे स्वच्छ भारत का नारा पूरा हुआ है। बेवफा वही है जिसने आत्मा परमात्मा को नही समझा। चरित्र निर्माण में मा के समान ब्रह्माकुमारीयों का किरदार है।यहां धर्म का कोई भेदभाव नही है।

खुला पंचम सत्र - प्रात: 11 से 12 ब्र.कु. सोमप्रभा बहन, राजयोग शिक्षिका, सोलापूर ने कहा वर्तमान समय विज्ञान का युग है दिन प्रतिदिन विज्ञान भौतिकता बढती जा रही है किन्तु आध्यात्मिकता नैतिकता घटती जारही है, अत:

आज आध्यात्मिकता आवश्यकता है। आत्मा का अध्ययन करना ही आध्यात्म। घर ग्रहस्थ में रहकर बेलेन्स् रखकर चले ये आध्यात्मिकता सिखाती है। पप्पनमियाँ शाह रहमानी सत्तारी, सूफीसंत फर्रुखाबाद आप ने कहा यहाँ खुद परमात्मा का नूर समाया हुआ है। यकीनन ये जगह मामूली जगह नही है,यहाँ रूहानीयत का जो ईलाज हो रहा है ऐसा कही नही पाया जाता है। रूह का सही ईलाज यही मिलता है।श्री.108 विश्वेश्वर शिवाचार्य दहिवडकर महाराज, बार्शी, सोलापूर ने कहा ओमशान्ती के भाई बहिनों का आचरण ही आध्यात्मिकता का प्रूफ् है। यहाँ सभी सन्तों का एक मात्र मायका है। खुला षष्टम् सत्र प्रात: 12 से 01 ब्र.कु. निरुपमा बहन, राजयोग शिक्षिका, पुरी ने कहा आत्मा के सात गुणों का सूत्र है K(P)2 HL BP । जो आंखों से दिखाई नही देता वही सत्य है। सारा जगत दिखाई देता है वही असत्य है। जहाँ त्याग है वहाँ पहले मै, जहाँ मान सम्मान है वहाँ पहले आप होना चाहिये। जहाँ सरलता है वह भगवान के करीब होजाता है।शास्त्री विश्व बिहारी स्वामी, स्वामी नारायण गुरुकुल-विरपुर आपने कहा आज मनुष्य परमात्मा को भूलकर अहंकार में जीवन जी रहे है, अत: सरलता –विनमृता की जरुरत है।

चतुर्थ प्रवचन समय सायं: 5-00 से 6-30 तक, विषय शान्ति की शक्ति द्वारा जीवन में सफलता-नारायण भाई, भीलवाडा-इन्दोर पंचम प्रवचन समय सायं: 6-30 से 8-00 तक, विषय शान्ति अनुभूति एवं प्रवचन सत्र-लक्ष्मी बहन,हांसी निरूपमा बहन, कविता बहन, नारायण भाई द्वारा योग अभ्यास षष्ठम प्रवचन समय रात्रि: 9-00 से 10-00 तक, विषय सरलता द्वारा तनाव मुक्त जीवन – दुर्गेश बहन –चित्रकूट ।

समापन सत्र दिनांक :10 अगस्त 2015 प्रात: 10.00 से 12.00ब्र.कु. मनोरमा बहनजी, राष्ट्रीय संयोजिका, धार्मिक प्रभाग, इलाहाबाद ने कहा समाज की संरचना में एक ही सशक्त आधार है संत।जब कथनी और करनी एक होती है तब ही श्रेष्ठ समाज की रचना होती है। यह आज सिर्फ संतो द्वारा ही हो रहा है। स्वामी अनिरुद्ध महाराज, वृंदावन ने कहा धर्म आध्यात्म एक जीवन जीने की कला हैं।प्रेम के माध्यम से संत समाज में परिवर्तन करता है।स्वामी केशवानंद सरस्वती, प्रधान-संरक्षक-शिक्षा सुधार समिती, सीतापुर ने कहा इस राष्ट्र की रक्षा सदा संतो के आर्शीवाद से होती है। आत्मिक अनुभूति इस ब्रह्माकुमारी आश्रम में होती है। ब्रह्माकुमारी के इस देश में हर गांव, नगर, शहरों में आश्रम हैं और सब सेन्टरों पर आत्मा और परमात्मा का अनुभव होता है। सदाकत हुसैन मौलाना सथेली, (इमाम), फर्रुखाबाद ने कहा सच्चा मुसलमान वे किसी को दु:खानही देता है यदि हम पत्ता भी गैर जरुरी तोडते है तो हमे इसका हिसाब देना होगा।राजयोगिनी नलिनी दीदीजी, सबझोन संचालिका, घाटकोपर, मुंबई ने कहा श्रेष्ठ समाज की रचना में ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग आवश्यक है।स्वामी रामदिनेशाचार्य जी महाराज, हरिधामपीठ गोपालमन्दिर, अयोध्या ने कहा प्राचीन काल में संत मार्ग दर्शन की भूमिका में रहते थें। ब्रह्मकुमारीयों को देना चाऊंगा कि इतने मठ पंथ, सम्प्रदाय और धर्म वालों को एक मंच पर इकट्ठा किया। प्रोफेसर बाबा निर्मल सिंह जी, कोऑर्डिनेटर साउथ ईस्ट एशिया राष्ट्रीय सिक्ख संघ, अमृतसर ने कहा ब्रह्माकुमारीज माऊण्ट आबू के ज्ञान और योग के वाइब्रेशन सारी दुनिया में फैलेगे तो समस्त समाज श्रेष्ठ हो जायेगा। ब्र. कु. करुणा भाईजी, मल्टी मिडिया चीफ, शांतीवन ने कहा वर्तमान समय में ऐसे धार्मिक सम्मेलन का आवश्यकता तथा विज्ञान के साथ साथ आध्यात्मिक ज्ञान अपनाने पर बल दिया।